विषय	हिन्दी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	P14:पाश्चात्य काव्यशास्त्र
इकाई सं. एवं शीर्षक	M33: बिम्ब : अर्थ और अवधारणा
इकाई टैग	HND_P14_M33
प्रधान निरीक्षक	प्रो. रामबक्ष जाट
प्रश्नपत्र-संयोजक	प्रो.अरुण होता
इकाई-लेखक	प्रो.सूरज बहादुर थापा
इकाई समीक्षक	प्रो. एस.सी कुमार
भाषा सम्पादक	प्रो. देवशंकर नवीन

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. बिम्ब का उद्देश्य
4. बिम्ब की अवधारणा
5. बिम्ब पर विचार
6. बिम्ब और कविता
7. बिम्ब का वर्गीकरण
8. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरान्त आप –

- बिम्ब की विभिन्न अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगे।
- बिम्ब और कविता के सम्बन्ध को समझ सकेंगे।
- बिम्ब पर विभिन्न विद्वानों के विचार से अवगत हो सकेंगे।
- बिम्ब के विभिन्न रूपों से परिचित हो सकेंगे।
- बिम्ब के उद्देश्य को समझ सकेंगे।

2. प्रस्तावना

किसी रचना में विषय-वस्तु के चित्रण को जीवन्त करने के बिम्ब का प्रयोग होता है। बिम्ब हमारी इन्द्रियों को प्रभावित करनेवाला काव्य तत्त्व है। ये हमारी संवेदना के तार छेड़ने के लिए हमारी इंद्रियों का सहारा लेता है। पढ़ने के लिए आँखों की जरूरत होती है। कवि जब शब्दों के माध्यम से किसी चित्रण में वह रूप-रस-गन्ध से भर देता है, हमें वस्तुबोध के लिए चमत्कृत करता है, तब बिम्ब की सृष्टि होती है।

बिम्ब का जुड़ाव संवेदना से होता हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता उनकी ऐन्द्रियता होती है। इसीलिए वह किसी निर्जीव वस्तु को भी सजीव की तरह प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए निराला की कविता *सन्ध्या सुन्दरी* को देखा जा सकता है-

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह सांध्य-सुकन्दरी, परी सी,
धीरे, धीरे, धीरे

निराला ने इस कविता में साँझ की बेला का चित्रण एक सुन्दरी के रूप में किया है। इस कविता को पढ़ते हुए आँखों के सामने एक सुन्दरी का बिम्ब बनने लगता है। उसका एक रूप उभरने लगता है।

3. बिम्ब का उद्देश्य

बिम्बों का प्रयोग साहित्य में आरम्भ से होता रहा है। प्रतीकों के विपरीत बिम्ब इन्द्रिय-संवेद्य होते हैं। अर्थात् उनकी अनुभूति किसी न किसी इन्द्रिय से जुड़ी रहती है। इसीलिए साहित्य में हमें दृश्य-बिम्बों के साथ-साथ श्रव्य, घ्राण और स्पर्श-बिम्बों का प्रयोग भी मिलता है। विश्व के परिवेश से रचनाकार कुछ दृश्य, कुछ ध्वनियाँ, कुछ स्थितियाँ उठाता है और अपनी कल्पना, संवेदना, विचार तथा भावना के योग से उन्हें तराश कर बिम्ब का रूप देता है। अपने कथ्य को संक्षेप, सघन रूप में प्रस्तुत करने के लिए, अपनी बात का प्रभाव बढ़ाने के लिए और किसी स्थिति को जीवन्त कर पाठक के सामने रख देने के लिए रचनाकार बिम्बों का प्रयोग करता है।

कवि बिहारी जब सफेद साड़ी के अन्दर से झिलमिलाते कर्णाभूषण के लिए सुबह-सुबह गंगा के जल में सूर्य की झिलमिलाती प्रतिच्छाया का बिम्ब रचते हैं तो वे केवल मामूली समानता नहीं दिखलाते, बल्कि उस दृश्य के तरल, कान्तिमय, दीप्त सौन्दर्य को भी मूर्तिमान कर देते हैं।

हिन्दी के छायावादी कवियों की कविताओं में भी अनेक प्रकार के बिम्बों का विधान मिलता है। उनके यहाँ के बिम्ब केवल दृश्य या ध्वनि-चित्र ही प्रस्तुत नहीं करते, गहन अनुभूतियों और संवेदनाओं को भी सम्प्रेषित करते हैं। उदाहरण के लिए *'बीती विभावरी जाग-री'* कविता में जयशंकर प्रसाद जब 'खग कुल-कुल-सा बोल रहा' कहते हैं तो 'कुल-कुल' ध्वनि का बिम्ब केवल पक्षियों के कलरव का प्रभाव ही नहीं देता, बल्कि देश, समाज तथा साहित्य में आते जागरण के उल्लास तथा उत्साह को भी व्यक्त करता है।

4. बिम्ब की अवधारणा

वस्तुत: बिम्बों का महत्त्व कवि सदा से स्वीकार करते हैं। एक काव्यान्दोलन के रूप में बिम्बवाद के प्रवर्तन का श्रेय अंग्रेजी कवि टी.ई.ह्यूम (सन् 1883-1917) को है। उनके विचारों से प्रभावित कुछ अंग्रेजी तथा अमेरिकी कवियों-एजरा पाउण्ड, ऐमी लॉवेल, हिल्डा डूलिटिल, रिचर्ड एल्डिगंटन आदि ने सन् 1912 के आसपास काव्य लेखन का एक कार्यक्रम तय किया, जिसमें उन्होंने भावावेगपूर्ण, संगीतमय, रोमानी काव्यभाषा के स्थान पर चुस्त, तराशी हुई, सटीक तथा रोमन क्लासिकी काव्य के अनुशासन तथा सन्तुलन और चीनी, जापानी काव्य की सूक्ष्मता, संक्षिप्ति और सुगठन को अपनाया। एजरा पाउण्ड तथा ऐमी लॉवेल इस समूह के सबसे सक्रिय सदस्य कहे जा सकते हैं। वे सभी कवि थे और बिम्बवाद के सिद्धान्तकार भी। सन् 1915 में उन्होंने अपना एक घोषणा-पत्र निकाला और सन् 1924 में उनकी कविताओं का सहयोगी संकलन *'स्पेकुलेशन'* नाम से प्रकाशित हुआ।

काव्यजगत में बिम्ब शब्द का प्रयोग प्राय: छाया, प्रतिच्छाया तथा अनुकृति आदि के लिए किया जाता है। आधुनिक काल में इस शब्द का प्रयोग व्यापक तथा विशिष्ट अर्थों में होने लगा है। हिन्दी में यह शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है और उसी अर्थ में ग्रहण किया जाता है। कहना चाहिए कि अपने वर्तमान स्वरूप तथा अर्थ में यह शब्द यूरोपीय साहित्य के समानान्तर ही हिन्दी में व्यवहृत होने लगा है।

5. बिम्ब पर विचार

मोनियर विलियम्स ने *'संस्कृत-इंग्लिश कोश'* में बिम्ब को व्याख्यायित करते हुए कहा है कि 'भारतीय सन्दर्भों में इस शब्द का रूपान्तरण सूर्य-चन्द्रमण्डल, प्रतिच्छवि, प्रतिच्छाया, प्रतिबिम्बित अथवा प्रत्यंकित रूप, चित्र आदि के अर्थ में माना गया है। (डॉ. नगेन्द्र, *काव्यबिम्ब*, पृ.4)'

बिम्ब एक ऐसी चेतन स्मृति है जो विचारों की मूल उत्तेजना के अभाव में उन विचारों को सम्पूर्णत: अथवा अंशत: प्रस्तुत करती है (*इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, खण्ड-12*, पृ.103)। तदानुसार बिम्ब का सम्बन्ध मानव-मन की चेतन स्मृतियों

से है। कई स्मृतियाँ विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाती हैं, अथवा मानस के किसी स्तर में स्वयं को लीन कर देती हैं। इस प्रकार अवचेतनगत विस्मृतियाँ फ्रायड की अवधारणाओं के अनुसार अन्य सृजनों का कारण तो बन सकती हैं, किन्तु बिम्ब निर्माण के लिए चेतन मन की आवश्यकता पड़ती है; क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध रूप, रंग और आकार से है, जिसके कारण वह विभिन्न मानवेन्द्रियों का विषय बनता है।

बिम्ब शब्द के व्युत्पत्तिपरक तथा कोषगत अनेक अर्थ हैं - किसी पदार्थ की मानसचित्र प्रतिकृति, कल्पना अथवा स्मृति में उपस्थित चित्र जिसका चाक्षुष होना अनिवार्य नहीं है, का उपयोग किसी व्यक्ति, वस्तु या प्रसंग के मूर्त्त और दृष्ट प्रत्यंकन के लिए करना बिम्ब निर्माण है। एक पदार्थ के लिए किसी मूर्त्त अथवा अमूर्त्त पदार्थ का प्रयोग, जो उसके अत्यधिक समान हो, उसे व्यंजित करता हो, जैसे मृत्यु के लिए निद्रा का प्रयोग, बिम्ब निर्माण कहलाता है।

वस्तुत: बिम्ब, बिम्ब होता है, मूर्त्त का भी, अमूर्त्त का भी, वह स्वयं कभी अमूर्त्त नहीं होता, क्योंकि उसका माध्यम ऐन्द्रिक होता है। व्हैले ने माना है कि 'उसमें आन्तरिक सादृश्य की अभिव्यक्ति की जाती है, पुनर्निमाण होता है, अत: उसके लिए क्रियाशील एवं उर्वरा कल्पना शक्ति की आवश्यकता होती है; और क्योंकि वह भावगर्भित होता है, भावना की पुनर्निर्मिति होता है व आन्तरिक सादृश्य की अभिव्यक्ति होता है, अत: उसमें भाव-तत्त्व, अनुभूति, राग-प्रेरणा अवश्य निहित होती हैं।

6. बिम्ब और कविता

काव्यबिम्ब को परिभाषित करते हुए लिविस का कहना है कि "वह एक प्रकार का भावगर्भित शब्दचित्र है, जो किसी न किसी रूप में इन्द्रियबोध से सम्बन्धित होता है। (सी.डी.लिविस, *दि पोयटिक इमेज*, पृ.18-19)" उनके अनुसार, "बिम्ब का सीधा सम्बन्ध अभिव्यक्ति तथा मानस-पट पर उभरने वाले चित्रों से है। कवि की अनुभूतियाँ बिम्ब के माध्यम से ही प्रेषित होती हैं। उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दों के माध्यम से मन पर कुछ रंग और कुछ रेखाएँ उकेरी जाती हैं। इन रंगों और रेखाओं से निर्मित संश्लिष्ट रूपाकार ही काव्यबिम्ब हैं। यह रूपाकार होने के साथ-साथ संवेदनात्मक भी होता है। (*दि पोयटिक इमेज*, पृ. 22)"

कविता में अवतरित होकर भी बिम्ब अपनी मूल विशेषताओं और भाव सन्दर्भों को सुरक्षित रखते हैं। काव्य-बिम्बों तथा सामान्य मानस-बिम्बों में एक मूलभूत अन्तर है। मानस:बिम्बों का मानव के विभिन्न मनोविकारों से अप्रत्यक्ष सम्बन्ध होते हुए भी, उसे प्रत्यक्षत: सिद्ध करना कठिन होता है, किन्तु काव्य-बिम्ब मानव मन के साथ-साथ जीवन तथा जगत के विभिन्न रहस्यों तथा आवेग-संवेगों का प्रकाशन करते हैं। काव्य-बिम्ब के लिए अनुभूति, भावना और कल्पना का सहज के साथ-साथ प्रयासरत होना भी आवश्यक होता है, जबकि मानस:बिम्बों के निर्माण में इन तत्त्वों का रेखांकन नहीं होता। काव्य-बिम्ब स्थूल और भौतिक सत्यों के अतिरिक्त पारलौकिक विचारों की अभिव्यक्ति के भी साधन बनते हैं, क्योंकि मानवीय कल्पना की सभी सीमाओं को बिम्बों में निबद्ध किया जा सकता है।

वस्तुत: काव्य-बिम्ब को काव्यालंकार अथवा काव्य की बाहरी रूपसज्जा की भाँति आरोपित नहीं समझना चाहिए। वह तो कविता का समग्रता में एक आंगिक अवयव हुआ करता है। इसी सन्दर्भ में एजरा पाउण्ड मानते हैं - "बिम्ब वह है जो काल की प्रासंगिकता में बौद्धिक और भावात्मक संरचनाओं को उपस्थित करता है।"

बिम्ब कविता में मात्र भावात्मक संरचनाएँ ही उपस्थित नहीं करता, काव्य में उसकी स्थिति अत्यन्त व्यापक एवं वैज्ञानिक है। इसीलिए आई.ए.रिचड्र्स ने बिम्ब का जो स्वरूप स्थिर किया वह इस दृष्टि से अधिक विचारणीय है - "बिम्ब एक दृश्य-चित्र, संवेदना की एक अनुकृति, एक विचार, एक मानसिक घटना, एक अलंकार, अथवा दो भिन्न अनुभूतियों के तनाव से बनी एक भाव-स्थिति... कुछ भी हो सकता है। (Coleridge, *On Imagination*, पृ.34)"

केदारनाथ सिंह कहते हैं कि "एक सफल बिम्ब एक पूर्ण परिपक्व विचार की अपेक्षा उसकी प्राक्परिपक्वावस्था के घात-प्रतिघातों, अन्तर्विरोधों और विकल्पों को अधिक गहराई से प्रतिबिम्बित करता है। (*आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान*, डॉ. केदारनाथ सिंह, पृ.27)"

7. बिम्ब का वर्गीकरण

पाश्चात्य समीक्षा के क्षेत्र में बिम्ब के वर्गीकरण की दो मुख्य पद्धतियाँ प्रचलित हैं - विषयवस्तु एवं मूलस्रोतों के आधार पर, तथा बिम्बों के गुणधर्म एवं रूपगत भिन्नताओं के आधार पर। इधर कुछ नए आलोचकों ने ऐन्द्रियता के आधार पर भी बिम्बों की अलग-अलग कोटियाँ निर्धारित की हैं। कुछ मनोविश्लेषणवादी आलोचकों के अनुसार स्वप्न, स्मृति तथा उपचेतन-सिद्धान्त ही बिम्बों के वर्गीकरण का वैज्ञानिक आधार बन सकते हैं। वर्गीकरण के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य का अभाव है। इसी कारण विभिन्न विद्वानों ने बिम्बों को अपनी-अपनी तरह से वर्गीकृत किया है। यहाँ केदारनाथ सिंह द्वारा किए गए वर्गीककरण के माध्यम से कविता को समझने का प्रयास किया जाएगा।
बिम्ब के शिल्पपक्ष व वस्तुपक्ष के आधार पर उन्होंने बिम्ब को निम्नलिखित आठ भागों में विभक्त किया है -

(क) सज्जात्मक बिम्ब : जो बिम्ब सजावट के काम में आते हैं, वे सज्जात्मक बिम्ब हैं। इन बिम्बों को अलंकार-विधान में ही निहित माना जाता है। रीतिकालीन कविताओं के लगभग बिम्ब इसी वर्ग में आते हैं। उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों में ऐसे बिम्बों की बहुलता पाई जाती है। आधुनिक युग में 'प्रसाद' की कविताओं में ऐसे बिम्ब के उदाहरण सहज ही मिल जाते हैं। उदाहरणार्थ -

बान्धा था विधु को किसने
इन काली ज़ञ्जीरों से,
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरों से।' (आँसू)

उपर्युक्त पंक्तियों में परम्परागत उपमानों द्वारा कवि बिल्कुल नया बिम्ब रचते हैं।

(ख) छायात्मक बिम्ब : जहाँ धुँधले, अस्पष्ट और फन्तासी चित्रों का सृजन होता है, वहाँ छायात्मक बिम्ब उभरते हैं। इन बिम्बों को सूक्ष्म या रहस्यवादी बिम्ब भी कहा जाता है। इनकी सबसे बड़ी विशेषता स्पष्ट मूर्ति के साथ हमारे सामने न आना है, इसमें मात्र धूमिल-भाव सम्मुख आते हैं। प्रसाद और महादेवी वर्मा के काव्य में इस प्रकार के बिम्ब सर्वाधिक मिलते हैं। उदाहरणार्थ-

मेरा पग-पग संगीत-भरा
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा
नभ के नवरंग बुनते दुकूल
छाया में मलय-बयार पली।

(*आधुनिक कवि*, भाग-1, पृ.39)

इन पंक्तियों में पाठक के मन में चित्र की एक धूमिल छाया-भर सामने आती है।

(ग) घनात्मक बिम्ब : घनात्मक बिम्बों में तीव्र अनुभूति तथा सूक्ष्म अभिव्यक्ति की व्याप्ति होती है। ऐन्द्रियता और मूर्तिमत्ता इन बिम्बों के मुख्य लक्षण होते हैं। इन बिम्बों का सौन्दर्य मुख्यत: 'पेण्टिंग' अथवा चित्रण की कुशलता पर निर्भर होता है। उदाहरणार्थ -

नीरव सन्ध्या में प्रशान्त
डूबा है सारा ग्राम-प्रान्त
पत्रों के आनत अधरों पर सो गया निखिल वन का मर्मर
ज्यों वीणा के तारों पर स्वर।

इसी प्रकार *'सरोजस्मृति'* में निराला ने विवाह के समय कन्या सरोज पर कलश का जल पड़ने के उपरान्त उसके सौन्दर्य में हुए सूक्ष्म परिवर्तन को कलात्मक ढंग से चित्रित किया है -

तू खुली एक उच्छ्वास-संग,
विश्वास-स्तब्ध बँध अंग-अंग,
नत नयनों से आलोक उतर
काँपा अधरों पर थर-थर-थर। (*अनामिका*, पृ.132)

वस्तुत: भावात्मकता, अनुभूति प्रधानता तथा दृश्यों की बहुलता इस प्रकार के बिम्बों की मुख्य विशेषताएँ हैं। छायावादी कविता के सफलतम बिम्बों में घनात्मक बिम्बों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती है।

(घ) मिश्रित बिम्ब : जहाँ एक से अधिक अनुभूतियों की व्याप्ति होती है, वहाँ मिश्रित बिम्ब पाए जाते हैं। ऐसे बिम्बों का जन्म, छायावादी कलात्मकता की अपनी देन कहा जा सकता है। जब अनुभूति की एक सीमा पर स्वर, गन्ध, स्पर्श, नाद

आदि के बीच की दूरियाँ समाप्त-सी जान पड़ती हैं, तब मिश्रित बिम्बों की सृष्टि होती है। इस दृष्टि से 'पन्त' को इन बिम्बों का प्रथम आविष्कर्ता माना जाता है, और इस कोटि के सर्वाधिक बिम्ब उनकी कविताओं में मिलते हैं -

इन्द्रधनुष की सुनकर टंकार
उचक चपला के चंचल बाल,
दौड़ते थे गिरि के उस पार
देख उड़ते विशिखों की धार। (*पल्लव*, पृ.68)

यहाँ पर दृश्य (इन्द्रधनुष का सौन्दर्य) और ध्वनि (टंकार) की कल्पना एक होकर, सर्वथा एक नवीन बिम्ब की सृष्टि कर रही हैं।

(ङ) उदात्त बिम्ब : कविता में जहाँ भव्य और विराट रूपों की कल्पना होती है, वहाँ उदात्त बिम्ब का सृजन होता है। कथा-प्रधान तथा लम्बी कविताओं में इस प्रकार के बिम्ब मिलते हैं। उदात्त बिम्बों के सर्वश्रेष्ठ कवि निराला ठहरते हैं। युद्धस्थल से लौटते हुए राम यह चित्र प्राचीन महाकाव्यों का-सा गहन और घनीभूत प्रभाव लिए हुए है -

दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर निशान्धकार,
चमकती दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार।
(*अनामिका*, पृ.146)

निराला की *'राम की शक्ति-पूजा'*, *'वनबेला'*, *'बादलराग'* तथा *'तरंगों के प्रति'* जैसी कविताओं में उदात्त बिम्ब के उदाहरण मिलते हैं। उनकी कुछ गीतात्मक कविताओं में भी उदात्त बिम्ब देखे जा सकते हैं -

चक्राकार कलरव-तरंगों के मध्य में
उठी हुई उर्वशी-सी
कम्पित प्रतनुभार,
विस्तृत दिगन्त के पार प्रियबद्ध-दृष्टि (*अनामिका*, पृ.2)

(च) नाद-बिम्ब : कविता में दृश्य चित्रों को अधिक प्रभावी और ग्राह्य बनाने के लिए शब्दों के साथ अदृश्य संगीत को भी कवि प्रधानता देते हैं, ऐसे कलात्मक सृजन से नाद-बिम्बों की सृष्टि होती है। इस दृष्टि से निराला नाद-बिम्बों के उत्कृष्ट कवि रहे हैं, *'राम की शक्ति पूजा'* का तो आरम्भ ही नाद-सौन्दर्य से होता है -

रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र में लिखा अमर,
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर

आज का, तीक्ष्ण-शर-विधृत क्षिप्त-कर वेग-प्रखर,

शतशैल संवरणशील, नीलनभ-गर्जित स्वर,

प्रतिपल-परिवर्तित व्यूह, भेद-कौशल-समूह,

राक्षस विरुद्ध प्रत्यूह-कुद्ध-कपि-विषम-हूह। (*अनामिका*, पृ.148)

इन पंक्तियों में ओजपूर्ण वातावरण की सृष्टि करने में ये अनुप्रास-प्रधान, नाद-बिम्ब पूर्णत: सफल हुए हैं।

(छ) अमूर्त बिम्ब : जिनके द्वारा अमूर्त्त शब्दों को भी कवि मूर्त्त रूप दे देता है, जिससे उनमें ऐन्द्रिय क्षमता आ जाती है, अमूर्त्त बिम्ब कहलाता है। उदाहरणार्थ -

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया। (*लहर*, पृ.11)

उक्त पंक्तियों में 'सुख' केवल अर्थबोध नहीं है, उसका एक गतिशील बिम्ब हमारे सामने खड़ा हो जाता है।

(ज) प्रतीकात्मक बिम्ब : प्रतीकात्मक बिम्ब काव्य के श्रेष्ठतम बिम्बों से है। कवि अपनी सर्जना के विभिन्न प्रसंगों में, एक ही बिम्ब की अनेक कलात्मक आवृत्तियाँ करता है, फलत: वहाँ प्रतीकात्मक बिम्बों की सृष्टि होती है। महादेवी वर्मा की कृतियों में दीप, फूल, बाती, तूली, झंझा, नक्षत्र, निर्झर आदि शब्दों की बार-बार आवृत्ति हुई है, उनके ये शब्द एक निश्चित अर्थ के द्योतक बन गए हैं। उदाहरणार्थ -

यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो।

झंझा है दिग्भ्रांत, रात की मूर्च्छा गहरी,

आज पुजारी बने ज्योति का यह लघु प्रहरी,

जब तक लौटे दिन की हलचल,

तब तक यह जागेगा प्रतिपल,

रेखाओं में भर आभा-जल

दूत साँझ का, इसे प्रभाती तक चलने दो।

छन्द में केन्द्रीय बिम्ब *'मन्दिर का दीप'* है। परन्तु 'दीप' शब्द उसके साथ किसी न किसी रूप में जुड़ा है, अत: इसी द्विमुखी भूमिका के कारण यहाँ प्रतीकात्मक बिम्ब की सृष्टि होती है।

8. निष्कर्ष

बिम्ब कविता का वह तत्त्व है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है। बिम्ब की सहायता से कविता में कम शब्दों द्वारा कवि अपनी बात प्रभावशाली ढंग से कह पाता है।

बिम्बवादी आन्दोलन की शुरुआत पश्चिम में हुई। इसके प्रमुख सिद्धान्तकारों में टी. एस. ह्यूम, एजरा पाउण्ड, आर्लाइंगटन और एमी लॉवेल प्रमुख हैं। पश्चिम में यह आन्दोलन बहुत दिनों तक नहीं चल सका। हिन्दी में बिम्ब को लेकर कोई आन्दोलन तो नहीं चला, लेकिन कवि अपनी रचनाओं में बिम्ब का प्रयोग सदा से करते आये हैं।

आधुनिक हिन्दी कविता में केदारनाथ सिंह बिम्ब के सबसे बड़े कवि माने जाते हैं। बिम्ब का जितना सफल और प्रभावी व्यवहार केदारनाथ सिंह ने किया, उतना हिन्दी के किसी और कवि ने नहीं किया।

A Gateway to All Post Graduate Courses